

विरह विकल ब्रच्छी ( ६३ )

हाय मुंहिजा ग़चिड़ा गरनि

विरह विकल दि़सी श्रीजू ब्रचिड़ी ।

पल पल पूर पवनि

कींअ सुखी थिये स्वामिनि मिठिड़ी ॥

राति दींहां वेठी नीरु वहाए

प्रीतमु वठी अची सखियुनि लीलाए ।

र.गूं बि सदि़ड़ा करनि सदां

सुखी रहे स्वामिनि ब्रचिड़ी ।१॥

अमां बाबा जे गोद में स्वामिनि

कदहीं सचेत कदहीं बेसुधि भामिनि

बाबा अमां रो.जु रड़नि

कींअ सुखी थिये स्वामिनि मिठिड़ी ।।२॥

सहेलियूं हथनि खे चन्दन लाइनि

कमल पतनि सां तपति मिटाइनि

तदहीं बि मच था मचनि

कींय सुखी थिये स्वामिनि मिठिड़ी ।।३॥

दिव्य उन्माद में मगनु किशोरी

पंहिजोई नामु रटे थी गोरी

बिन्ही भावनि उरिझियो जीवन

कींअ सुखी थिये स्वामिनि मिठिड़ी ॥४॥

श्रीकृष्ण नाम जो कीर्तन प्यारो

स्वामिनि प्राणनि जो रखवारो

गरीबि श्रीखण्डि रो. जु रटिनि

सदां सुखी थिये स्वामिनि मिठिड़ी ॥५॥